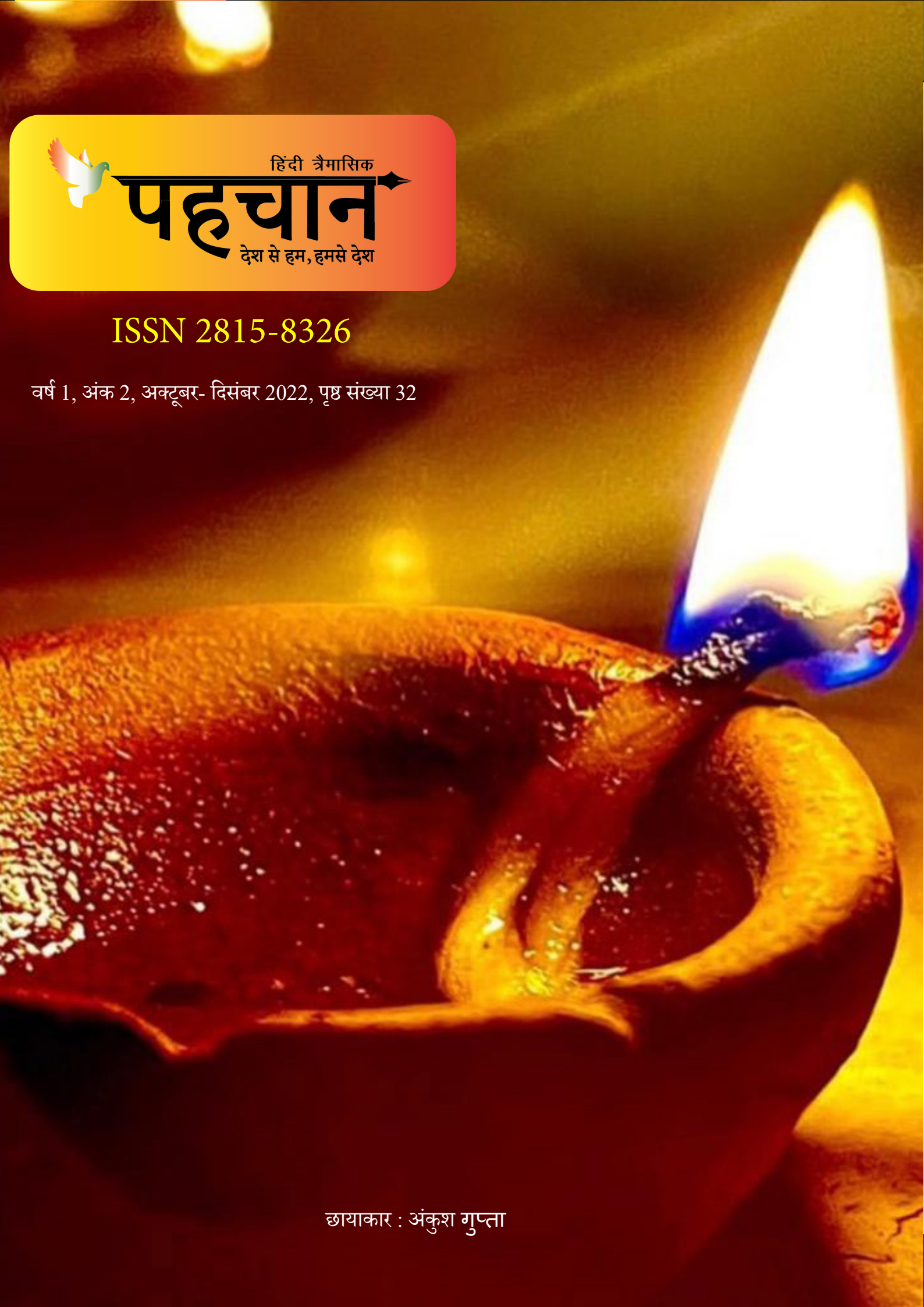

हिंदी त्रैमासिक

पहचान

देश से हम, हमसे देश

ISSN 2815-8326

वर्ष 1, अंक 2, अक्टूबर- दिसंबर 2022, पृष्ठ संख्या 32

छायाकार : अंकुश गुप्ता

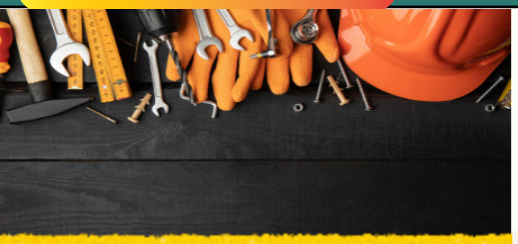

ArchPoint Ltd

ARCHPOINT LTD

You Dream, We make the Dreams True!

BEST

CONSTRUCTION

BETTER

HOME

Our Best Services:

- PROVIDING END-TO-END RESOURCE CONSENT, EPA AND BUILDING
- CONSENT SERVICES
- FEASIBILITY STUDIES - PRE & POST PURCHASE OF YOUR PROPERTY
- ARCHITECTURAL DESIGNING
- PLANNING & PROJECT MANAGEMENT
- SURVEYING
- GEOTECHNICAL INVESTIGATIONS & REPORTS
- CIVIL ENGINEERING FOR INFRASTRUCTURE DESIGNING
- STRUCTURAL ENGINEERING

engineering new zealand

LICENSED BUILDING PRACTITIONER BUILDING CONFIDENCE

PMI NEW ZEALAND CHAPTER

ADNZ Architectural Designers New Zealand Professional Member

Phone: +64 21848 552 **archpoint.co.nz**

GODWIN-AUSTEN

GODWIN-AUSTEN

You Wish, We bring the wishes to Reality!

Our Best Services:

- Subdivisions & Building Construction on Turn Key Basis
- Land and Home Packages
- Design & Build
- 10 Years Master Builder Guarantee
- Auckland Wide Operations

MASTER BUILDERS

PMI NEW ZEALAND CHAPTER

Phone: +64 21889 918 +64 21848 552 **godwinausten.co.nz**

हिंदी त्रैमासिक
पहचान
देश से हम, हमसे देश

संस्थापक/ प्रधान संपादक : प्रीता व्यास

सलाहकार संपादक : रोहित कृष्ण नंदन

सहयोगी संपादक : माला चौहान

मीडिया एडिटर : नेहा पटेल

कवर पेज : अंकुश गुप्ता

प्रकाशक
प्रीता व्यास, पहचान
आकलैंड, न्यूज़ीलैंड
editor@pehachaan.com

पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं, उनसे प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं. रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है. कुछ चित्र और लेखों में प्रयुक्त कुछ आंकड़े इंटरनेट वेबसाइट से संकलित किये गए हो सकते हैं.

कुछ ऐसे समाचार रोज ही कहीं न कहीं सुर्ख़ियों में होते हैं जिन्हें सुनकर बड़ा दुःख होता है, अफ़सोस भी और कई बार तो मानवता से विश्वास डगमगाता लगता है. क्यों होतीं हैं ऐसी घटनाएं? ये कौन सी ताकतें और कौन सी कमज़ोरियाँ हैं जो दिमागों को गलत- सही का बोध ही भुला देती हैं?

नवरात्रि चल रही है. शक्ति की आराधना का समय है. विश्व को जीवन मूल्य सिखाने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाने वाले राम के द्वारा असुरों के संहार के बाद अयोध्या लौटने के उत्सव का समय है, दीप पर्व का समय है और इस प्रार्थना का समय है कि विधाता हमें असत से बचाएं और सत की ओर प्रेरित करें, अंधकार के गर्त से निकाल कर प्रकाश की ओर प्रेरित करें. हमें मृत्यु से परे अमरत्व का आशीष दें.

असतो मा सद्गमय.

तमसो मा ज्योतिर्गमय.

मृत्योर्मामृतं गमय.

प्रेम, उपहार, सांता क्लाज़ और क्रिसमस का माहौल भी दिसंबर जाते- जाते ले कर आता है. समस्त विश्व की मंगलकामनाओं के साथ "पहचान" का दूसरा अंक आपके सामने है. आपका सहयोग, साथ, संदेश, सलाह मिले.

प्रीता व्यास
प्रधान संपादक

इस अंक में

1. पाठकीय प्रतिक्रिया		5 - 6
2. आलेख		
अनदेखी रह गई शांता की व्यथा	ध्रुव गुप्त	7 - 8
3. विचार पोस्टर	पंकज दीक्षित	8
4. भाषा ज्ञान		
राम और उसके उर्दू अर्थ	आदिल रशीद	9
5. ग़ज़ल		
दो ग़ज़लें	अजय अज्ञात / आलम खुर्शीद	10 -11
6. कहानी		
या तो खेलूंगा मैं ही या खेल नहीं होने दूंगा	संदीप द्विवेदी	12 - 14
7. अनुवाद		
लड़कियों की कविताएं	प्रदीप सिंह	15
8. लघु कथा		
आदमी कहीं का/ परिणाम	रोहित कुमार 'हैप्पी'	16
9. लोक जीवन		
आस्था और विश्वास की प्रतीक लोक देवियां	विनोद मिश्र सुरमणि	17 - 20
10. व्यंग्य		
लेने - देने की साड़ियां	पल्लवी त्रिवेदी	21- 22
11. बाल साहित्य		
मंकी ब्रिगेड	शिरीष शर्मा	23 – 24
12. पुस्तक समीक्षा		
'रेत समाधि' ठहराव के साहित्य का रेखांकन है	गीत चतुर्वेदी	25 - 27
13. चंद अशआर		27
14. रसोई		
नवरात्रि के प्रसाद- प्रयोग	शेफ़ मकरंद कारखानिस	28 - 29
15. आलेख		
चॉकलेट स्वाद से सौंदर्य तक	माला चौहान	30
16. विज्ञापन		31
17. चित्र प्रतियोगिता		
इस तिमाही का विजेता चित्र	डॉ. अपराजिता शर्मा	32

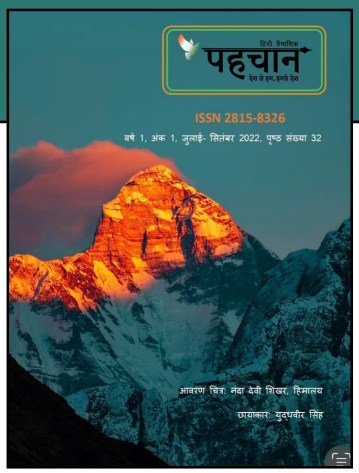

सब कुछ बड़े ही कलात्मक तरीके से व्यस्थित है. आपकी सुरुचि की झलक दिखती है. सभी रचनाएँ सारगर्भित हैं. कुल मिला कर यह प्रवेशांक संग्रहणीय लगा. बहुत साधुवाद. आप हिंदी के लिए अच्छा कर रही हैं.

- विजय कुमार अग्रहरि, भारत

मध्य प्रदेश की लब्धप्रतिष्ठ कवयित्री प्रीता व्यासजी विदेश में निवास करती हैं. वह सुरुचि-सम्पन्न साहित्य-साधिका हैं. उनकी दृष्टि प्रकृति, पर्यावरण, परिन्दों, वनस्पति और वन्यजीवों तक फैली हुई है, व्यापक है. इतना कह सकता हूँ कि पत्रिका का आवरण और कलेवर सुंदर है और यात्रा का ये प्रथम पुष्प आकर्षित करता है.

-आनंदवर्धन ओझा, भारत

खूब खूब बधाई और आशीर्वाद इस से तुम्हारे परिश्रम की पहचान जुड़ी हैं.

-राजशेखर व्यास, भारत

अप्रैल में प्रीता ने बताया कि वो एक ई- पत्रिका का प्रकाशन करने वाली है, उसी की तैयारी में लगी है. ये 22 अप्रैल की बात है और एक जुलाई को पत्रिका लॉन्च भी हो गयी! किसी पत्रिका के प्रकाशन में कितनी तैयारियां करनी पड़ती हैं ये वही जान सकते हैं जो प्रकाशन से जुड़े हैं. मुझे तो लगता है कि ई- मैगज़ीन में ज़्यादा मेहनत है. शानदार कलेवर की पत्रिका 'पहचान' में पूरे 12 फीचर्स समेटे गए हैं. स्तरीय रचनाओं का समावेश और तस्वीरों के सुंदर संयोजन ने पत्रिका को बहुत आकर्षक बना दिया है.

सबसे बड़ी बात, इस मैगज़ीन के भाषा सेक्शन में जा के आप पूरी मैगज़ीन को अपनी पसन्दीदा भाषा में कन्वर्ट कर सकते हैं. ये ऑप्शन मुझे किसी पत्रिका में पहली बार मिला. खूब मेहनत की है प्रीता ने पत्रिका के साथ. अपने इंट्रोडक्शन वीडियो में वे कहती हैं कि ये गागर में सागर भरने का प्रयास है, और यक़ीन मानिए, प्रीता अपने इस प्रयास में सफल रही हैं. मेरी कहानी को भी पहचान के इस पहले अंक में स्थान मिला है. बहुत धन्यवाद पहचान टीम. बहुत बधाइयां.आप सबसे निवेदन है कि इस पत्रिका का अवलोकन अवश्य करें.

- वंदना अवस्थी दुबे, भारत

"पहचान" मुझे बहुत पसंद आई. ये मेरी कल्पना से बाहर है. पूरी टीम को बधाई.

- सनीला घई, न्यूज़ीलैंड

"पहचान" की शुरूआत ने प्रभावित किया. ये हम प्रवासियों की सच्ची पहचान बने ये शुभकामना है मेरी.

- पंकज त्रिपाठी, डालास (अमेरिका)

इतिफाक से ये वेबसाइट खोली. खूबसूरत और सामग्री भी आकर्षक. मुझे कहानी पढ़कर अपनी बुआ जी का मोहल्ला याद आ गया जहां दोपहर बड़ी-पापड़ करते ऐसी ही गप्पों की महफ़िल लगती थी.

- सिमरनजीत, कनाडा

आज पहचान का प्रथम अंक पढ़ा, आपको इस सदप्रयास के लिए हार्दिक शुभकामना. ई-पत्रिका वह भी अनेक भाषाओं में. पहचान की पहचान सुदूर- सुदूर तक बने यही कामना है. एक बार पुनः बधाई.

-ओम प्रकाश दीक्षित, भारत

अद्भुत पत्रिका है. प्रीता जी की दृष्टि और श्रम दिखाई देता है. बधाई.

- राजेश्वर वशिष्ठ, भारत

पहचान पत्रिका के लिए मेरी शुभकामनाएं. यह शब्द ही ऐसा है जो साहित्य से हमारी पहचान कराएगा.

- सरोज कुमारी गौरिहार, भारत

'पहचान' वेबसाइट बहुत अच्छी है. 'पहचान ' ई-पत्रिका का प्रवेशांक भी पढ़ा, मुझे बेहद पसंद आया. मेरी शुभकामनाएँ आपको और पहचान की टीम को.

- विजय राही, भारत

"पहचान" ने हमें फिर से 70- 80 के दशक की सारिका, कादंबनी, आदि पत्रिकाओं की याद ताजा कर दी जिसमें ऐसी मन को छूती हुई क्षणिकाएं, मुक्तक, छंद पढ़ कर आनंदित होते थे. मनोरम दृश्य कवर. शुभ कामनाएं, साधुवाद.

- तूलेश सितोके, भारत

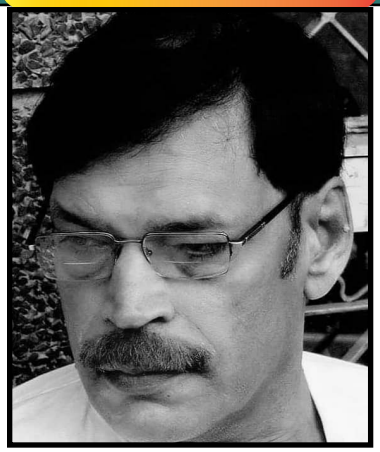

ध्रुव गुप्त

अनदेखी रह गई शांता की व्यथा

दुनिया भर में तीन सौ से ज्यादा रामायण प्रचलित हैं. इन सभी रामायणों की कथाओं में लेखकों की व्यक्तिगत आस्थाओं और रुचियों के अनुरूप थोड़ी- बहुत भिन्नताएं हैं. इनके अलावा जाने कितनी लोककथाएं भी हैं राम के बारे में. उत्तर भारत में हम रामचरित मानस के आधार पर ही राम- कथा को जानते- मानते हैं. देश की कुछ लोककथाओं में राम की एक बहन के संकेत मिलते हैं. मानस में राम की कोई बहन भी थी, इसका कोई उल्लेख नहीं है. बाल्मीकि रामायण में दशरथ की एक पुत्री शांता का उल्लेख ज़रूर आया है- 'अङ्ग राजेन सख्यम् च तस्य राज्ञो भविष्यति. कन्या च अस्य महाभागा शांता नाम भविष्यति.' शांता के जीवन की कुछ घटनाओं की जानकारी कुछ लोककथाओं और दक्षिण भारत की कुछ रामाकथाओं से ज़रूर मिलती है.

दक्षिण और उत्तर भारत की कुछ लोककथाओं के अनुसार दशरथ और कौशल्या की पुत्री शांता राम सहित चारों भाइयों से बहुत बड़ी थीं. दुर्भाग्य से वह उस युग की रूढ़ियों, अंधविश्वासों का शिकार हो गई. शांता जब पैदा हुई, तब अयोध्या में भीषण अकाल पड़ा. चिंतित दशरथ को पुरोहितों ने कहा कि उनकी अभागी पुत्री ही इस भीषण अकाल का कारण है. उसका त्याग किए बिना प्रजा का कल्याण संभव नहीं. दशरथ ने पुरोहितों की बात मानकर शांता को अपने एक निःसंतान मित्र और साढ़ू रोमपद को दान कर दिया. रोमपाद तब अंग के राजा हुआ करते थे. उनकी पत्नी वर्षिणी कौशल्या की बहन थीं. रोमपाद के आपदाग्रस्त राज्य में एक बार श्रृंगी ऋषि ने एक सफल यज्ञ का आयोजन किया. यज्ञ के सकारात्मक परिणाम से हर्षित रोमपाद ने अपनी पालित पुत्री शांता का ब्याह श्रृंगी ऋषि से कर दिया.

चित्रांकन : आराधना मिश्रा

इधर अयोध्या में दशरथ और उनकी तीनों रानियों को अरसे तक कोई अन्य संतान नहीं हुई. उनकी चिंता यह थी कि पुत्र नहीं होने की स्थिति में उनके विशाल साम्राज्य का उत्तराधिकारी कौन होगा. कुलगुरू वशिष्ठ ने उन्हें सलाह दी कि आप अपने दामाद ऋंगी ऋषि की देखरेख में ऋषियों से एक पुत्रेष्ठि यज्ञ करवाएं. दशरथ ने यज्ञ में देश के कई महान ऋषियों के साथ ऋंगी ऋषि को मुख्य ऋत्विक बनने के लिए आमंत्रित

किया. अयोध्या में पुनः अकाल पड़ जाने के भय से उन्होंने बेटी शांता को नहीं बुलाया. पत्नी के बिना श्रृंगी ने उनका आमंत्रण अस्वीकार कर दिया. अंततः विवशता में दशरथ को अपनी बेटी शांता को भी बुलावा भेजना पड़ा. ऋंगी ऋषि के साथ शांता के अयोध्या पहुंचते ही राज्य में कई सालों बाद भरपूर वर्षा हुई. यज्ञ के पूर्व वर्षा को यज्ञ की सफलता की पूर्व सूचना माना गया.

पुत्रेष्टि यज्ञ की समाप्ति के बाद भावनाओं में डूबती- उतराती अकेली शांता जब दशरथ के सामने उपस्थित हुई तो दशरथ उन्हें पहचान नहीं सके. आश्चर्यचकित होकर उन्होंने पूछा- 'देवी, आप कौन हैं? आपके पांव रखते ही अयोध्या में चारों ओर वसंत छा गया है.'

शांता ने अपना परिचय दिया तो पुत्री और माता- पिता की बरसों से सोई स्मृतियां भी जागीं और भावनाओं के कई बांध भी टूटे. यज्ञ के सफल आयोजन के कुछ दिनों बाद शांता ऋषि श्रृंग के साथ अपने आश्रम लौट गई.

इस घटना के बाद शांता की अपने माता- पिता, भाईयों और स्वजनों से भेंट का किसी ग्रंथ या लोककथा में कोई उल्लेख नहीं मिलता. कभी- कभी मन में यह सवाल अवश्य उठता है कि पुत्र- वियोग में प्राण त्यागने वाले दशरथ को कभी अपनी निर्वासित पुत्री की याद क्यों नहीं आई? कुछ वर्षों पहले के एक टेलीविजन सीरियल में राम की बहन शांता के साथ मिलन का एक प्रसंग दिखाया गया था. संभवतः कल्पना के आधार पर ही. यह सोचकर आश्चर्य होता है कि राम के परिवार और उनके जीवन की छोटी से छोटी घटना का उल्लेख करने वाले आदिकवि बाल्मीकि और गोस्वामी तुलसीदास से तपोवन के एकांत में बसी शांता की व्यथा अनदेखी और अनकही कैसे रह गई?

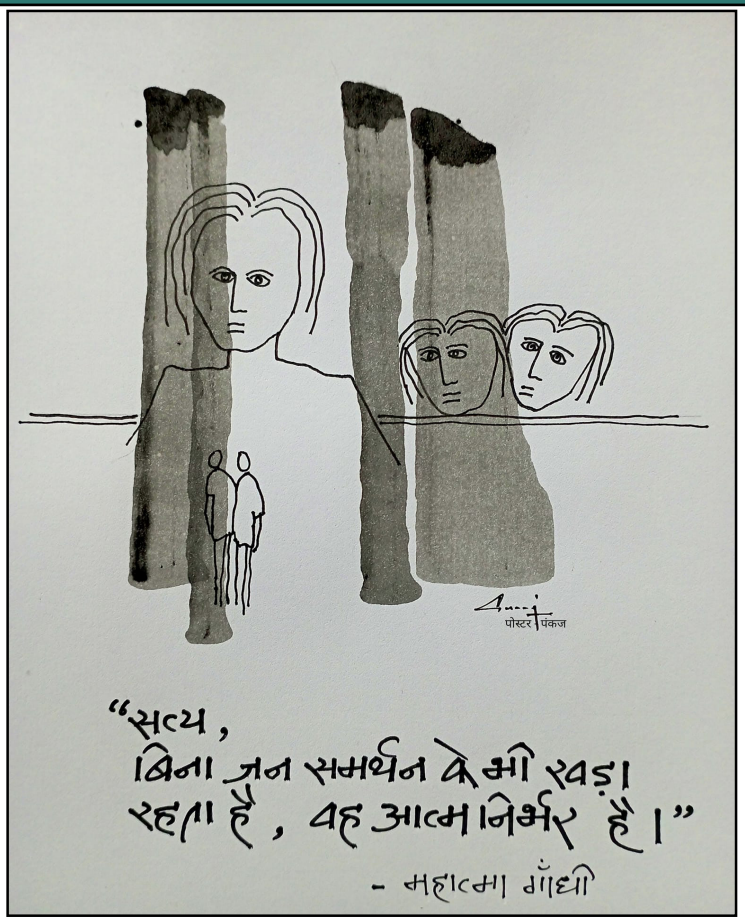

पोस्टर : पंकज दीक्षित

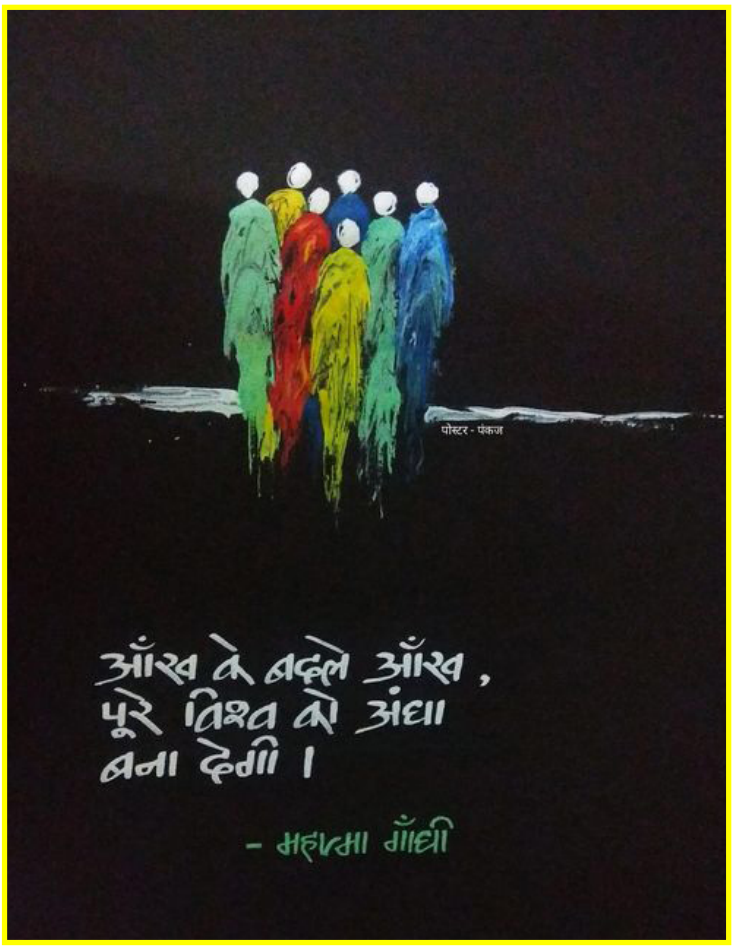

राम और उसके उर्दू अर्थ

आदिल रशीद

बहुत से शब्द ऐसे होते हैं जो केवल एक भाषा में ही नहीं बल्कि किसी दूसरी भाषा में भी शामिल होते हैं. ऐसे शब्दों के अर्थ अन्य भाषा में भी कुछ अलग भी हो सकते हैं. 'राम' एक ऐसा ही शब्द है और मेरा फ़र्ज़ है कि मैं इस पर कुछ लिखूं.

मर्यादा पुरूषोत्तम राम का नाम राम क्यों है?

संस्कृत में राम शब्द के जो भी अर्थ हों परंतु फ़ारसी भाषा में जो प्रथम अर्थ हैं वह ताबे अर्थात काबू (वश) में कर लेना है, यानि जिसने अपनी भावनाओं, अपनी इंद्रियो को वश में कर लिया हो (जितेंद्रिय).

जो दूसरा अर्थ है, वो है फरमाबरदार यानि आज्ञाकारी. इन दोनों अर्थो को आप देखें और मर्यादा पुरूषोत्तम राम का जीवन देखें तो आपको सही उत्तर मिल जाएगा. (उर्दू- फ़ारसी शब्दकोष में 'राम' शब्द का अर्थ काबू यानि वश, व आज्ञाकारी लिखा हुआ है).

संस्कृत में राम शब्द में 'रा' शब्द परिपूर्णता/ संपूर्णता का बोधक और 'म' परमेश्वरवाचक है. 'रमते कणे- कणे इति रामः' अर्थात् जो प्राणीमात्र के हृदय में, सृष्टि के कण- कण में 'रमण' (निवास) करते हैं तथा भक्तजन उनमें 'रमण' करते हैं, ध्याननिष्ठ होते हैं, वही 'राम' हैं. राम शब्द का एक अर्थ भीतरी प्रकाश भी है तथा राम शब्द जीवन की गति का द्योतक भी है.

मेरी तीन बेटीयां हैं सबसे छोटी बेटी का नाम अरनी है, जो अरुण से बना है जिसका अर्थ है सूर्योदय की पहली किरण. ईश्वर ने मुझे एक ही बेटा दिया जिसका नाम हस्सान है जिसका नाम मैं राम रखना चाहता था लेकिन एक बुज़ुर्ग ने हस्सान उसकी सुंदरता को देखकर रख दिया और मैं आदर में उनकी बात न काट सका. अगर खुदा ने मुझे दूसरा बेटा दिया होता तो मैं उसका नाम राम ही रखता.

राम शब्द का प्रयोग आप मेरे एक शेर में देखें-

जो हम पे फ़र्ज़ है हमको वो काम करना है

उठो कि हमको सितारों को राम करना है.

अजय अज्ञात

1.

लालची कमज़ोर मन ने क्या से क्या करवा दिया
एक मायावी हिरन ने क्या से क्या करवा दिया.

वासना पे काबू रख पाए न विश्वामित्र भी
रूप के सुरभित सुमन ने क्या से क्या करवा दिया.

इक घड़े के साथ दरिया पार कर आया कोई
इश्क़ म दीवानेपन ने क्या से क्या करवा दिया.

आज भी कुरुक्षेत्र देता है सनद इस बात की
कौरवों के वहशीपन ने क्या से क्या करवा दिया.

हो गया बेताब खिलजी पद्मिनी के वास्ते
हुस्न के उस बांकपन ने क्या से क्या करवा दिया.

2.

ख़ाली कभी भरा हुआ आधा दिखाई दे
चाहे जो जैसा देखना वैसा दिखाई दे.

जैसे सराब दूर से दर्या दिखाई दे
हर चेहरे में मुझे तेरा चेहरा दिखाई दे.

मुट्ठी में सब समेटने की आरज़ू लिए
पैसे के पीछे दौड़ती दुनिया दिखाई दे.

औलाद चाहे जैसी हो मां बाप को सदा
अच्छा सभी से अपना ही बच्चा दिखाई दे.

लड़ने लगे हैं धर्म ही के नाम पर 'अजय'
इंसानियत की क़ौम पे ख़तरा दिखाई दे.

आलम ख़ुर्शीद

1.

इसीलिए तो किसी ने हमें बचाया नहीं
कि डूबते हुए हम ने उन्हें बुलाया नहीं.

हमें था खौ़फ़ कहीं यार कम न हो जाएं
सो मुश्किलों में किसी को भी आज़माया नहीं.

ये खोए खोए से रहते हैं क्यूं हमेशा हम
किसी ने पूछा नहीं, हम ने भी बताया नहीं.

न जाने कब से दरीचे मेरे खुले ही नहीं
न जाने कब से इधर चांद जगमगाया नहीं.

बहुत दिनों से मिले ही नहीं हैं हम ख़ुद से
बहुत दिनों से कोई शख़्स याद आया नहीं.

अब उसकी फ़िक्र सताने लगी हवाओं को
वो इक चराग़ जो हम ने कभी जलाया नहीं.

किसी को याद भला हम ने कब किया आलम
मगर जो याद हुआ हो उसे भुलाया नहीं.

2.

बस एक हमें ख़्वाब से इंकार नहीं है
दिल वर्ना किसी शय का तलबगार नहीं है

आंखों में हसीं ख़्वाब तो हैं आज भी लेकिन
ताबीर से अब कोई सरोकार नहीं है

लहरों से अभी तक है वहीं इश्क़ हमारा
कश्ती में हमारी कोई पतवार नहीं है

क्यों इतना हमें अपनी मुहब्बत प यकीं है
दुनिया जो मुहब्बत की तलबगार नहीं है

हैरत से नए शहर को मै देख रहा हूं
दीवार तो है साय ए दीवार नहीं है

महफ़िल में चहकते हुए चेहरों को तो देखो
लगता है यहां कोई दिल आज़ार नहीं है

अफ़वाह उड़ाई है किसी शख़्स ने आलम
अब कोई मुहब्बत का परस्तार नहीं है

या तो खेलूंगा मैं ही या खेल नहीं होने दूंगा

संदीप द्विवेदी

किसी समय की बात है. भारत वर्ष में अत्यंत ही सुरम्य, रमणीक और हरीतिमा से आच्छादित एक विशालकाय कानन था. झरनों, नदियों, पर्वतों, घाटियों की श्रृंखला उस कानन को प्रवास के लिए एक आदर्श स्थल का रूप देती थी. उस कानन में अनेक प्रकार के जीव जंतु प्रेम भाव से रहते थे. प्रेमभाव से इसलिए कि वहां प्रकृति प्रदत्त सभी संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे, इतने प्रचुर कि यदा- कदा अथवा आपातकाल में दूसरे वनों-उपवनों से भी प्राणी वहां शरण लेने के लिए आ जाते थे और कानन की विशालता और समृद्धता के कारण कई जीव तो ऐसे भी थे जो कभी अपने निवास स्थान को छोड़ कर कहीं और गए ही नहीं. इसके पश्चात् भी कभी किसी प्रकार के मतभेद अथवा वैमनस्य के लिए वहां गौण स्थान ही रहा. गौण स्थान भी इसलिए कि जहां कहीं भी परस्पर प्रेम और सौहार्द अपनी पूर्णता में दिखता है वहां ऐसी स्थितियों का व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति के लिए उपयोग करने वाले भी सहज ही उत्पन्न हो जाते हैं.

तो उस कानन में विभिन्न जीव- जंतु, पक्षी- कीट आदि रहते और स्वच्छंद विचरण करते थे. एक गजराज था जो कभी भी उन्मत्त नहीं होता था क्योंकि उसने अपने जीवन में सब कुछ बहुत पहले ही देख-समझ लिया था. जब कभी किसी प्रकार की समस्या उत्पन्न होती तो गजराज चुटकियों में उसका सर्वमान्य निवारण कर देत. अन्य वनवासियों की दृष्टि में उसे अत्यंत सम्मानित स्थान प्राप्त था.

एक भेड़िया था जो अपने क्षेत्र को छोड़ कर दूसरे क्षेत्रों में अपने भोजन की खोज में जा कर शिकार करता था. इसी कारण उसके क्षेत्र में रहने वाले उसके प्राकृतिक आहार (खग- मृग आदि) भी सुरक्षित रहते थे. तालाब में एक मगरमच्छ भी रहता था जो तालाब की अपरिमित मछलियों को ग्रास बना कर ही संतुष्ट हो जाता था और पानी पीने के लिए आने वाले किसी भी प्राणी पर आक्रमण नहीं करता था. हां, जो सहज वृत्ति रुपी आक्रामकता थी वह यदा- कदा प्रत्यक्ष हो ही जाती थी.

एक हिरणी थी जो विस्तृत घास के मैदानों में स्वतंत्र विचरण करके अपना पेट भरती और मगरमच्छ के तालाब से पानी पी कर अपनी प्यास बुझाती. एक भालू था जो मधुमक्खियों से मांग कर मधु भक्षण करता और झरने के शीतल जल में क्रीड़ा करते हुए अपना समय व्यतीत करता. एक बुलबुल भी थी जो रहती तो अपने घोंसले में ही थी लेकिन कभी- कभी उसके मन की जिज्ञासा और उत्सुकता उसे अकेले ही दूर- दूर तक उड़ने के लिए विवश कर देती, प्रकृति के श्रृंगार को देख कर उसका कोमल- मासूम मन आह्लादित हो उठता था. उसकी प्रसन्नता भरी चहचहाहट सुन कर दूसरे जीव- जंतु भी आनंदित हो उठते और उसे साधुवाद देते, उसके मित्र हो जाते. ऐसे ही अनेकानेक प्राणी वहां सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते और कानन की समृद्धि,

संपन्नता बढ़ती ही जाती.

कानन के एक कोने में एक लंगूर भी रहता था जो यूं तो अपने जीवन से संतुष्ट था पर दूसरे प्राणियों को अधिक प्रसन्न देख कर उसे ईर्ष्या भी होती. वो अक्सर पेड़ से लटके- लटके भेड़िये को उलाहना देता रहता कि जब सब कुछ अगल- बगल ही उपलब्ध है तो दूर क्यूं जाते हो, इतने जीव हैं किसी एक को खा लोगे तो क्या पता चलेगा, तुम्हें मेहनत तो नहीं करनी पड़ेगी. भेड़िया उसकी बात सुन कर मुस्कुराता और आगे बढ़ जाता. फिर वो लंगूर गुलाटियां मारते हुए आगे जाता और तालाब के मगरमच्छ से कहता कि एक ही जैसी मछलियां खाते- खाते मन नहीं भर जाता तुम्हारा, ऊब नहीं जाते, कभी उस हिरणी के नर्म मांस को भी चख कर देखो मछलियां बेस्वाद लगने लगेंगी. मगरमच्छ चुपचाप सुनता रहता और जब लंगूर से तंग आ जाता तो उसे डरा कर भगा देता. फिर लंगूर भालू के पास जाता और उसे उकसाता कि मधुमक्खियों से भीख मांगते शर्म नहीं आती, तुम तो बलशाली हो, शरीर बालों से भरा हुआ है, पेड़ पर चढ़ कर झपट्टा मार कर पूरा छत्ता तोड़ लिया करो, मन भर खाने को मधु भी मिलेगा और मनोरंजन जो होगा सो अलग. सुनते- सुनते भालू ऊब जाता तो पंजे फटकारता और लंगूर वहां से भी खिसक लेता.

पर वह शैतानी खोपड़ी ही क्या जो शांति से बैठ सके? लंगूर नित नई योजनाऐं बनाता और प्राणियों को आपस में भड़काने का प्रयत्न करता. अपने प्रयासों में सफलता न मिलती देख लंगूर ने अपनी ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए फिर योजना बनाई. अब वह सबसे उनका हितैषी बन कर रहने लगा. किसी को कोई कठिनाई होती तो उनसे मीठे बोल बोलता और उनकी कुछ सहायता भी कर देता. लंगूर की यह मक्कारी धीरे-धीरे सफल होने लगी. लंगूर को सबसे अधिक कष्ट था तो उस भोली- भाली बुलबुल से. सबको उससे प्रेम करते देख वह मन ही मन कुढ़ता रहता. उसे यह लगता कि प्राणी उसकी स्वार्थपरक सहायता के ऊपर बुलबुल की निश्छलता को वरीयता देते हैं. बुलबुल जहां भी जाती लंगूर उस पर दृष्टि रखता. कभी भूले से उसके क्षेत्र में आ जाती तो उसके मीठे गीतों में अपनी चीख- पुकार से व्यवधान डालता. कोई अंतर न पड़ते देख पूरे पेड़ को झकझोर डालता तो बुलबुल बगल के पेड़ पर बैठ कर गाने लगती. अंततोगत्वा अपनी अनदेखी की छटपटाहट में आहिस्ता से जा कर बुलबुल के पंख नोच लेता, वो दर्द से कराह उठती और रोती हुई अन्यत्र चली जात. उसे रोता देख लंगूर को अथाह तृप्ति मिलती.

एक वर्ष मौसम ने करवट ली. घोर सूखा पड़ा. नदियां, तालाब, वृक्ष सूखने लगे. कानन की समृद्धता के चलते अनेक प्राणी प्रवास करके वहां आ गए. संसाधनों पर दबाव पड़ने लगा. परस्पर सौहार्द क्षीण पड़ने लगा, लंगूर की तो बन आई, प्रवासी बंदरों के झुण्ड से वह जा मिला और रोज़ नए षड़यंत्र रचने लगा. नवागंतुकों की अनभिज्ञता और मैत्री के अभाव के कारण उसके यह षड़यंत्र फलीभूत भी होने लगे. भेड़िये ने दूर जाना छोड़ दिया. मगरमच्छ तालाब से बाहर आ कर खरगोशों को खाने लगा. कानन के मूल निवासी चिंतित हुए कि यदि यही अवस्था रही तो वह दिन दूर नहीं जब यह कानन भी नष्ट हो जाएगा. लंगूर प्रतिदिन किसी भूखे प्राणी को तलाशता और कानन की प्रचुरता के उपरान्त भी उसे किसी ऐसे स्थान पर ले जाता जहां पहले से ही कई आश्रित होते और इस कारण विवाद की स्थिति उत्पन्न होती. लंगूर दूर से मज़े लेता और बाद में चटखारे ले कर बंदरों के झुण्ड को सब सुनाता और सब मिलकर ठहाके लगाते.

सूखे के चलते बुलबुल ने जिस वृक्ष पर घोंसला बनाया था वह भी सूख गया और आसपास का स्थान निर्जन हो गया. बुलबुल ने हिम्मत न हारी और एक नया स्थान चिह्नित कर के वहां अपना नया घोंसला बनाया. बुलबुल वहां बैठ कर गीत गाने लगी.

आसपास के जीव उस निर्मम मौसम में भी आनंदित हो उठे. लंगूर से यह देखा न गया और बंदरों का झुण्ड जो पास के ही पेड़ों पर जमा हुआ था, के पास पहुंचा और कहने लगा कि देखो इस चिड़िया की गुस्ताख़ी, यहां हम लोग अपनी जान बचाने का प्रयास कर रहे हैं और यह गीत गा कर हमें चिढ़ा रही है. लंगूर की बातों में आकर बंदरों का झुण्ड आक्रोश में आ गया और उस पेड़ पर आक्रमण कर के बुलबुल के घोंसले को तहस- नहस कर दिया.

बुलबुल ने फिर नया घोंसला बनाया और बंदरों ने फिर आक्रमण कर दिया. बुलबुल ने पूछा कि वे ऐसा क्यूं कर रहे हैं तो बंदरों ने कहा कि हमें तेरा गीत गाना पसंद नहीं, या तो तू हमारी तरह बेवजह की चीखपुकार मचा, ऊधम कर, या फिर ये कानन छोड़ कर चली जा. हताश बुलबुल मगरमच्छ, भेड़िये और भालू के पास भी गई मगर कोई उसकी पीड़ा न समझ सका. फिर बुलबुल गजराज के पास गई तो गजराज ने उसे आश्वासन दिया कि कुछ दिनों की बाद है, सावन आएगा बादल घिरेंगे और फिर सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा. इस कल्पना ने बुलबुल को रोमांचित कर दिया और वह प्रसन्न हो कर चहचहाने लगी. ऊंचे आसमान में उड़ने लगी. वहीँ उसे एक कठफोड़वों का झुण्ड मिला जो भोजन की खोज में भटक रहा था. बुलबुल की प्रसन्नता देख कर वे विस्मित रह गए. पूछने पर बुलबुल ने उन्हें कारण बताया और अपने साथ कानन ले गई. कानन के अनेक वृक्षों पर कठफोड़वों ने अपने लिए कोटरें बना लीं और बुलबुल की सदाशयता के चलते एक कोटर उसे भी उपहार स्वरुप दे दिया. अब बुलबुल भी सुरक्षित हो गई और अपने घोंसले के बंदरों और लंगूर के द्वारा तोड़े जाने का डर भी उसे न रहा. बुलबुल नित नए गीत गाती और बादलों को रिझाती. उसकी उन्मुक्तता देख कर लंगूर जलभुन जाता और बंदरों के साथ मिल कर जाल बुनता. एक दिन आवेश में आकर लंगूर ने बंदरों के झुण्ड के साथ मिल कर बुलबुल की कोटर पर आक्रमण कर दिया और उसके जतन से रखे गए भोजन को निकाल कर फेंक दिया. बुलबुल लौट कर आई तो देख कर बड़ी उदास हुई और रोने लगी. कठफोड़वों ने यह देख कर उससे कारण पूछा तो उसने सारी बात बताई. कठफोड़वों ने उसे आश्वस्त किया.

अगले दिन बुलबुल और भी ऊंचे सुर में गाने लगी, लंगूर को यह न सुहाया और उसने बंदरों को ढूंढा पर वे भोजन की खोज पर गए होने के कारण उसे न मिले. आवेश में आ कर लंगूर ने अकेले ही बुलबुल पर आक्रमण कर दिया पर बुलबुल सतर्क थी और वह और भी ऊंची डाल पर बैठ कर और ज़ोर से गाने लगी. लंगूर और ऊपर चढ़ा और बुलबुल और ऊपर उड़ी. अब लंगूर बुलबुल की कोटर की ओर लपका. यह देख कर बुलबुल ने शोर मचाया और सारे कठफोड़वे अपनी कोटरों से निकल आए और चोंच मार-मार कर लंगूर का बुरा हाल कर दिया और वह पस्त हो कर धरती पर आ गिरा. अगले ही क्षण घनघोर बादल घिर आये और भीषण वर्षा होने लगी. धरती तृप्त होने लगी, सूखी नदियां फिर बहने लगीं, तालाब भर गए, फिर वृक्षों पर नई कोपलें आने लगीं, कानन फिर समृद्ध हो गया. लंगूर कई दिनों तक वहीँ घायल पड़ा रहा पर किसी ने उसे न पूछा, बन्दर तो पहले ही घनघोर वृष्टि के चलते पलायन कर चुके थे. अंत में, बुलबुल आई और एक फल लंगूर के पास गिरा दिया. फल खा कर लंगूर को कुछ शक्ति आई और वह धीरे- धीरे उठ कर अपने रास्ते चल पड़ा.

वो बुलबुल आज भी गीत गाती है और लंगूर अब भी षड़यंत्र के जाल बुनता है पर बुलबुल अपनी दुनिया में ख़ुश है, मस्त है लेकिन लंगूर अपनी व्यग्रता में इस पेड़ से उस पेड़ तक कूदता- फांदता रहता है और फिर ख़ाली हाथ लौट कर चला आता है.

लड़कियों की कविताऐं

प्रदीप सिंह

लड़कियों की लिखी कविताऐं
पढ़ी नहीं जातीं
अब मुझसे,
मन भर आता है
रुंध जाता है गला
और
रुदन निकल पड़ता है.
उन्होंने लिखा इतना
दर्द भरा
मैं नहीं लिख सकता
न पढ़ ही सकता हूं.
महिलाएं, लड़कियां
दर्द सह कर
तराशती हैं आहें
अंदर के दर्द और सदमों की
नदियों में तैर कर
पीड़ाओं को जी के लिखती हैं.
गले पड़ी मुसिबतों से
व्यस्तताओं में से निकलते हुए
बड़ी मुश्किल से
वक़्त चुराकर लिखती हैं.
ज्यों कोई बहुत भरा- भरा सा मन
रो-बिलख कर
दहाड़ें मार
आंसू बहा
एक पल को ही सही
जरा सी राहत तो पा जाता है,
ऐसे ही सिसकियों को
अक्षर, शब्द के लच्छे बना
दर्द के ताने- बाने पर
बुनती हैं
कविताऐं भी,
नज़्म- नज़्म भरी भावुकता
दुख- दर्द तड़प और बेचैनी
कहां पचते हैं
फिर मुझ जैसे
नाजुक दिल पाठकों को?
अंदर से सुबक- सुबक
रो- रो लिखी हर एक
चिट्ठी
पढ़ने सुनने वाले के
आंसू भी तो छलकाएगी ही
ऐसा ही हाल मेरा भी होता है
इन परदेसी चिड़ियों की
हूक सुनके, कविताऐं पढ़के.
जैसे ये पीडाओं को मन में
गुणा कर के
टुकड़ों में बंट के
लिखती हैं
पढ़ी नहीं जाती
मुझसे.
हैरान हूं
टूट-टूट के
ये
ऐसे कैसे लिख लेती हैं दर्द को
पर
लड़कियों की लिखी कविताऐं
अब
मुझसे पढ़ी नहीं जातीं.

(हरभजन सिद्धू मनसा की पंजाबी कविता का हिंदी अनुवाद. मनसा जी सेना से सेवा निवृत्त हुए हैं और पंजाबी व हिंदी में इनकी कई किताबें आ चुकी हैं.)

रोहित कुमार हैप्पी

आदमी कहीं का

'भौं... भौं...' की आवाज से मेरी तंद्रा टूटी.

आज काम में ऐसा व्यस्त हुआ कि ना अपनी सुध रही और न उन दो पिल्लों की, जिनके खान- पान का दायित्व कुछ दिनों के लिए मेरी पड़ोसन मुझे सौंप गई थी. मैं जल्दी से उठा और दोनों पिल्लों के लिए अंदर से उनका खाना ले आया.

मैंने दोनों को पुचकारते हुए, उनका खाना डाल दिया. वे दोनों पूंछ हिलाते हुए जल्दी- जल्दी खाने लगे. एक पिल्ले ने बड़ी शीघ्रता से अपने सब बिस्कुट खा लिए और लपक कर दूसरे का भी एक बिस्कुट खा लिया. दूसरा पिल्ला उसके इस व्यवहार पर बुरी तरह गुर्राया, मानो कह रहा हो, 'आदमी कहीं का!'

परिणाम

उस शानदार महल की दीवारों पर लगे सफेद चमकीले पत्थरों का सौंदर्य देखते ही बनता था. दर्शक उन पत्थरों की सराहना किए बिना रह न सकते थे. सुंदर, चमकीले पत्थर लोगों से अपनी प्रशंसा सुन फूले न समाते.

आलीशान महल की दीवारों पर लगे शानदार पत्थरों ने एक दिन नींव के पत्थरों से कहा, 'तुम्हें कौन जानता है? हमें देखो, हमें कितनी सराहना मिलती है?'

नींव के पत्थरों ने झुंझलाकर, थोड़े अशांत मन से कहा, "हमें शांत पड़े रहने दो. शांति भंग मत करो."

नींव के पत्थरों की झुंझलाहट और थोड़ी- सी अशांति के फलस्वरूप महल की कई दीवारें हिल गईं और उनमें लगे कई आत्म-मुग्ध सुंदर पत्थर अब जमीन पर गिरे धूल चाट रहे हैं.

आस्था और विश्वास की प्रतीक लोक देवियां

विनोद मिश्र सुरमणि

सृष्टि की संरचना से ही शक्ति की उपासना, चाहे वह प्राकृतिक स्वरूप से हो या प्रवृत्ति से निर्मित मान्यता के आधार पर, सदैव की जा रही है. कारण, निराकार स्वरूप में हमने जिस शक्ति को स्वीकारा वह उत्पत्ति और सृजनकर्ता ही हमारे लिए ध्येय बनी. पंचतत्व में से पृथ्वी, अग्नि और वायु स्त्रीत्व का स्वरूप प्रकट करती हैं. गंगा को मातृत्व भाव में स्वीकार करना हमारी श्रद्धा को शक्ति के प्रति आशक्त बन जाने का माध्यम बना. विनाश, पतन, धर्महीनता विपत्तिकाल में सर्वशक्ति देवी ने ही उबारा है। सृष्टि की संरचना से लेकर सतयुग, त्रेता और द्वापर काल तक देवीय शक्ति को ही सुर, किन्नर और मानव जाति तक को संरक्षित बनाये रखने हेतु अवतरित होना पड़ा है. प्रलय, अकालता, विनाशकारी शक्तिओं के आकृमिक प्रहारों से भी हमें महाशक्तियों ने उबारा है अर्थात देवीय शक्ति ही जीव कल्याण संरक्षक, पोषक और पालनकर्ता है.

हमारी भारतीय आध्यात्मिक परम्परा में देवी उपासना उतनी ही महत्वपूण है जितना कि जीवन में प्राणवायु. शिव और शक्ति की उपासना आदिकाल से मनुष्य के लिए साधना का मार्ग रहा है. नवरात्रियों में जप- तप, उपासना कर अपने जीवन को कृतार्थ बनाते हैं साथ ही लोक मान्यताओं में व्याप्त उन समस्त माध्यमों को भी अपनी मान्यता प्रदान करते हैं जो निराकार स्वरूप में हमारे बीच उपस्थित रहते हैं. ज्ञान और भक्ति के आधार पर ज्ञान जहां उपासना पद्यति के सिद्धांतिक माध्यम से आराधना कर यथोगति पाता है, वहीं भक्ति लोकाचार के माध्यम से उसी स्थिति पर पहुंच जाती है यानि लोक, आस्था, मान्यता और विश्वास सिद्धांतिक ज्ञान की तुलना में फल प्राप्ति तक शून्य नहीं है.

हमारे सामाजिक और पारिवारिक संस्कारों में लोक का बड़ा महत्व है. उपासना, पूजा, अर्चना में लोक देवता, लोक देवियों को उसी प्रकार मान्यता के साथ पूजा गया है, जिस प्रकार हमारे धार्मिक आराध्यों को पूजा जाता है. बुन्देलखण्ड क्षेत्र ऐसी अनेकों परम्पराओं से धनाड्य रहा है.

आज भी ये मान्यतायें विलुप्त नहीं हुई हैं. लोक देवता हो या देवियां पत्थर की छोटी सी सिला के रूप में एक चबूतरे पर पथरा कर उन्हें उसी भाव से पूज लेते हैं जैसे किसी वैभवशाली मंदिर में स्थापित विग्रह को. आस्था चाहे व्यापक रूप में हो या साधारण संसाधन के बीच, सदैव से निष्ठा और विश्वास की संलग्नता बनी रहती है. रैदास की कठौती में ही गंगा प्रवाहित हो जाती है.

हम विज्ञान को नहीं झुठला सकते, पर आस्था और विश्वास को भी नहीं नकार सकते. लोक देवता के चबूतरे की पांच परिक्रमा

लगाने से रोग ठीक हो जाते हैं. डोंगे बाबा, रामचेरे, हीरामन, कारसदेव, देवतानी बाबा, बुन्देला बाबा के सिद्ध चबूतरे पशुओं की बीमारियों को ठीक कर देने वाले माने जाते हैं. कुछ सदी पूर्व तक गांव - देहात में चिकित्सा और उसकी वैकल्पिक व्यवस्था के यही सब साधन थे. कारसदेव, और हीरामन पशुओं के देवता के रूप में आज भी पूजे जाते हैं. उनके चबूतरे पर पूजा अर्चन एवं विषेश अवसरों पर ‘‘गोट’’ गाने की परम्परा आज भी है.

दतिया क्षेत्र की लोक मान्य देवियों की बात करते हैं. ऋतुकालीन त्यौहारों एवं मांगलिक कार्यों पर घर परिवार में जिन लोक देवियों को यहां की महिलायें पूजती आ रही हैं, वह किसी जिला या क्षेत्र मात्र तक सीमित नहीं हैं. इतना जरूर है कि लोक भाषा या वार्तालाप या स्थानों से उनके नामों की पहचान अलग-अलग की जाती है. कालिका देवी को कालिका, छोटी कालिका, चौमुखी कालिका के नाम से भी जानते हैं. यहां यह भी संभव हुआ कि किसी संबंधित व्यक्ति ने अपनी आस्था एवं साधना के जीवट रूप को समर्पित कर दिया और उनके समर्पण और विश्वास से वह स्थान और अधिक जागृत हो गया. कभी-कभी भक्त के नाम से ही देवताओं की पहचान हो जाती है. बैनीबाई की मड़िया या अन्य ऐसे ही उदाहरण. बैनी एक महिला है जिसने किसी देवी के प्रति समर्पित भाव से उनके चबूतरे का निर्माण कराकर एक मड़िया बना दी. लोग पहचान के लिए कहने लगते हैं कि फलां स्थान बैनीबाई की मड़िया के पास है. कालान्तर में बैनी ही उस स्थान की विशलेषण बन जाती है.

दतिया क्षेत्र में जिन लोक देवियों को आज मंगल कार्यों में विशेष रूप से पूजा जाता है, उनमें कालिका, छोटी कालिका, चौमुखी कालिका, संकटा, आसारानी, आसोमाई, मंसिल देवी, बीजासेन, दशारानी, हुर्इयां, चम्पू कालिका, बेटीबाई एवं सत्ती आदि प्रमुख हैं. शादी विवाह के मांगलिक कार्य में बीजासेन, संकटा, कालिका और हुर्इयन का पाटो भरना अनिवार्य परंपरा है. ऐसी व्यवस्था भी रखी गई है कि स्वेच्छा से पाटो वर्ष के किसी भी समय में सुविधानुसार किया जा सकता है.

पाटो एक संकल्प है जिस संकल्प को पाटने या पूर्ण करने हेतु अलग-अलग दिन निश्चित किये गये हैं. संक्षिप्त में अध्ययन करने पर मूलतः 3 या 4 देवीयों के पाटे भरे जाने की परंपरा संपूर्ण बुंदेलखण्ड में प्रचलित है. पाटो की परम्परा का निर्वहन घर पर ही किया जाता है. यहां यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि समाज के वर्गों के आधार पर पूजा- अर्चना सुविधा रूचि और भाव से बना ली गई हैं. कालिका एवं मंसिल देवी के चबूतरे जो कि नगर के परकोटे के बाहर बने हुए हैं, पर सामान्य पूजा अर्चना के साथ बली प्रथा भी प्रचलन में है. विशेषकर वर्षाकाल के समय अषाढ़ का महिना इस कार्य हेतु उपयुक्त समझा जाता है. कुछ जाति विशेष के लोग इसे मान्यता दिये हुए हैं.

(1) संकटा देवी- संकटों से मुक्ति दिलाने हेतु संकटा मैया को घर-घर में पूजा जाता है. मूलतः शादी विवाह में संकटा की पूजा अनिवार्य होती है इसके लिए शुक्रवार का दिन सर्वमान्य है. पूजा सामग्री में लाल कपड़ा, 8 लाल चूड़ियां, नारियल, पान सुपाड़ी, सिंदूर लगता है. प्रसाद के रूप में सूजी का हलवा, खीर, पूड़ी, फल और दही उपयुक्त माने जाते हैं.

संकटा की सुहागिलें- मांगलिक कार्यों के साथ सामान्य समय में भी संकटा का पाटो भरने की परम्परा है, जिसमें 8 सुहागिलों को आमंत्रित कर उन्हें टीका, माहौर, सुहाग की सामग्री प्रदान की जाती है. पान के पत्ते पर संकटा की पुतरियां लिखी जाती हैं. पूजन-अर्चन उपरांत संकटा देवी की कहानी एक बुजुर्ग महिला सभी स्त्रिओं को सुनाती है. कथा विर्सजन के बाद सभी को प्रसाद स्वरूप भोजन कराये जाते हैं. सभी सुहागिल महिलायें अपने आंचल की छोर से देवी को प्रणाम करती हैं और जिसके लिए पाटों भरा जाता है उसके सुखमयी जीवन की कामना करती हैं.

(2) बीजासेन- लोक मान्यताओं के आधार पर बीजासेन की पूजा- अर्चना करना सुहागिल स्त्री को अनिवार्य माना गया है. इस पूजा में 9 सुहागिलों को आमंत्रित कर पाटो भरा जाता है. जिसमें 9 पुतरियों की आकृति वाली तबिजिया की पूजा कर पाटो भरने वाली वधु को पहनाई जाती है. परंपरा है कि लड़की की शादी में उसके ससुराल पक्ष के लोग बीजासेन की तबिजिया चढ़ाये में देते हैं. बीजासेन आल्हखण्ड में मलखान द्वारा एक घटनाक्रम में मारी गई राजकुमारी की कहानी है. राजकुमारी की अतृप्त आत्मा नरवर की राजकुमारी पर अवतरित हुई जिसका नाम विजेसिन था जो बीजासेन से ध्वनि साम्य होती है. कालांतर में देवी बीजासेन के रूप में वह श्रद्धा के साथ पूजी जाने लगी. बुंदेली लोकगीत में कहा गया है कि ‘‘बामी के नीरे कनैर नौ बीजासेन विराजी हों मां’’ वहीं रतिभानु कवि लिखते हैं ‘बीजासेन तविजिया संगे छुटियां मूं गन बाई”. बीजासेन के पाटे में घर के भीतर उरेन डाला जाता है. एक पटा या चबूतरे पर नौ बुदकियां लगाकर पूड़ियों के नौ ढेर लगाये जाते हैं और 9 सुहागिल स्त्रियों को वह नौ ढेर प्रदान किये जाते हैं.

(3) कालका देवी:- कालका की पूजा वर पक्ष के घर, नववधु के आगमन पर होती है, उस समय कालका का पाटो भरने की परंपरा है. कालका लोकगाथा शास्त्रानुसार वैश्वानर की पुत्री तथा कश्यप ऋषि की पत्नि की संतान कालकेय नामक दानव था. मान्यता है कि यदि नववधु के लिए कालका का पाटो न भरा जाये तो कालका नाराज हो जाती है और मानसिक तथा शारीरिक रूप से वधु के लिए व्याधियां बढ़ाती हैं. पाटो भरने की परम्परा में विवाह के पश्चात किसी भी शनिवार का पूजन किया जाता है. चार सुहागिल महिलायें आमंत्रित कर उन्हें भोजन कराया जाता है. विवाह में जिस चूल्हे का प्रयोग भोजन प्रसादी के लिए किया जाता है उसी चूल्हे पर सिंदूर से कालका माई का चित्रांकन कर प्रसाद स्वरूप तेल की पूड़ियां, आटे का हलवा लगाया जाता है, जिसे आमंत्रित चार सुहागिलों को टीका, माहुर लगाकर कौरा के रूप दिया जाता है.

(4) आसोमाई या आसमाई- 64 जोगनियों में से इन चार जोगनियों की एक साथ पूजा करने का विधान आसोमाई की पूजा है जिसमें आसमाई, प्यासमाई, भूखमाई और नींद माई यह चार वृद्ध देवियां हैं. वैशाख कृष्ण पक्ष की द्वितीय को इनका पूजन होता है. घर की ज्येष्ठ महिला वृत रखती हैं. आटा और गुड़ की आसें बनाकर पूजन करती हैं. जिस स्थल पर पूजा की जाती है वहां गाय के गोबर से लीपकर चौक पूरा जाता है. एक नई गागर पानी से भरकर रखी जाती है जिसपर चंदन से चार पुतरियां बनाई जाती हैं. पूजन उपरांत सात पुओं का छिरका जाता है और किसी पूज्य महिला को भेंट किया जाता है. आसोमाई की मड़िया जगह-जगह बनी हैं दतिया में आसोमाई का चबूतरा और उस पर बनी मड़िया की प्रसिद्धि के कारण गली का नाम भी आसोमाई की गली पड़ गया है.

(5) अन्य लोक देवियां- ऊपर उल्लेखित कालका, संकटा, बीजासेन, आसोमाई के बाद दतिया क्षेत्र में सती, दयारानी, हुर्रईयां, बेटीराजा, मन्सिल देवी आदि लोक देवियों की पूजा अर्चना उसी भाव से की जाती है जिस भाव से पूर्व में दी गई पूजाओं की चर्चा लेख में की जा चुकी है. मन्सिल देवी तांत्रिक देवी है, जिनको शाकाहार एवं मांसाहार दोनों प्रवृत्तियों के लोग पूजते हैं. दतिया में मन्सिल देवी का स्थान नये ताल के मरघट पर बना हुआ है इसलिए इन्हें मरघटयाऊ भी कहते हैं. मूल पूजा आषाढ़ और भादों में होती है.

लोक में व्याप्त देवियों का पूजन लोगों की अपनी- अपनी आस्था है. भक्त के नाम से भी देवियों के नाम पड़ जाते हैं. चम्पूकाल कालका, बैनी की मड़िया, लौंड़ी, सेननार वाली कालका, फूला देविन, राती माई, मरई की माता आसमानी और गजाजन आदि अनेकों के नाम से इन्हें पूजते हैं. आस्था और विश्वास से वह फलित भी होती हैं. हमें आस्था और लोक मान्यताओं को केन्द्र बिन्दु मानकर सर्वसम्मति से इन आध्यात्मिक प्रतीकों पर शीश झुकाते रहना चाहिए.

कथन:

"मैंने अपना नाम बदला, वेशभूषा बदली, खान-पान बदला, संप्रदाय बदला लेकिन हिंदी के संबंध में मैंने विचारों में कोई परिवर्तन नहीं किया."

- महापंडित राहुल सांकृत्यायन

लेने- देने की साड़ियां

पल्लवी त्रिवेदी

आप शादियों के सीज़न में किसी भी साड़ी की दूकान पर चले जाइए, आपके यह कहते ही कि "भैया, साड़ियां दिखाइये" दुकान वाले का पहला प्रश्न होगा कि "लेने- देने की दिखाऊं या अच्छे में दिखाऊं?"

मतलब इस प्रश्न से इतना तो सिद्ध हो गया कि लेने- देने की साड़ियां अच्छी नहीं होतीं.

अब अगर आप वाकई में लेने- देने की साड़ियां ही खरीदने गए हैं तो दुकानदार का अगला प्रश्न होगा "कितने वाली दिखाऊं?". उसके पास अस्सी रुपये से लेकर ढाई सौ तक की रेंज मौजूद है.

एक कुशल स्त्री अस्सी से लेकर ढाई सौ तक की सभी साड़ियां पैक कराती है. घर जाकर वो पिछले बीस वर्ष का बही खाता खोलती है. सबसे पहले उसे ये देखना है कि किस- किस ने कब- कब उसे कैसी साड़ियां दी हैं?

"अब बदला लेने का सही वक्त आया है. जैसी साड़ी तूने मुझे दी थी न उससे भी घटिया साड़ी तुझे न टिकाई तो मेरा नाम भी "फलानी" नहीं."

अगर दस साल पहले उस महिला ने सौ रुपये की साड़ी दी थी तो बदला लेने में दस साल बाद अस्सी की साड़ी पचहत्तर में लगवाकर उसके मुंह पर मारी जाती है.

अगर वह महिला किसी रिश्तेदार के घर के लड़के को जमाई बनाने का सपना संजोये बैठी हो तो उसे ढाई सौ की साड़ी विद टू बाई टू रुबिया के ब्लाउज पीस के साथ भन्नाट पैकिंग में दी जावेगी जिसमें थर्माकोल के मोती भी इधर- उधर लुढ़क रहे होंगे और दस का करकरा नोट भी सबसे ऊपर शोभा बढ़ा रहा होगा.

ये भी खासी ध्यान रखने की बात होती है कि कहीं ऐसा न हो कि दो साल पहले जिस ननद ने जो साड़ी दी थी, वापस उसी के खाते में न चली जाए और अगर चली भी जाए भूल- चूक से तो इन लेने- देने की साड़ियों के कलर, कपडे और डिजाइन में इतना साम्य होता है कि दो दिन पहले दी हुई साड़ी भी अगर वापस मिल जाए तो किसी को संपट नहीं पड़ती. वही सस्ते पॉलिएस्टर का सुरसुरा- सा कपड़ा, वही घचपच डिजाइन, वही चट्ट पीले पे चढ़ता झक्क गुलाबी और भूरे भक्क पर चढ़ाई

करता करिया कट्ट रंग.

सबसे मजेदार बात यह है कि सब जानते हैं कि लेने- देने की साड़ियां कभी पहनी नहीं जातीं. चाहे अस्सी की हों चाहे ढाई सौ की. ये हमेशा सर्क्युलेशन में ही रहती हैं. ये रमता जोगी, बहता पानी हैं. ये सच्ची यायावर हैं. ये वो प्रेत हैं जो कभी इसे लगीं, कभी उसे लगीं. इधर से मिली, उधर टिकाई और उधर से मिली, इधर टिकाई.

एक बेहद कुशल गृहणी यह पहले से पता करके रखती है कि जो साड़ी उसे मिलने वाली है, वह किस दुकान से खरीदी गयी है. वह बेहद प्रसन्नता पूर्वक उस साड़ी को स्वीकार करती है, बल्कि उसके रंग और पैटर्न की तारीफ़ करती है और जल्द ही फ़ाल, पिकू करवाकर पहनने की आतुरता भी दिखाती है और अगली दोपहर ही उसे दुकान पर वापस कर दो सौ रुपये और मिलाकर एक अच्छी साड़ी खरीद लाती है.

और ये भली स्त्रियां इन लेने देने की साड़ियों को भी छांटती, बीनती हैं और बाकायदा पसंद करती है. साड़ी भी मुस्कुराती हुई कहती है "हे भोली औरत! क्यों अपना टाइम खोटी कर रही है? जिस पर हाथ पड़ जाए वही रख ले. क्या तू नहीं जानती कि हम तो सदा प्रवाहमान हैं. हम हिमालय से निकली वो गंगा हैं जो किसी शहर में नहीं टिकतीं. अंत में हमें किसी के घर की काम वाली बाई रुपी समुद्र में जाकर विलीन होना है."

वे साड़ियां जो समस्त पास, दूर के रिश्तेदारों को टिकाए जाने के बाद भी बची रह जाती हैं उन साड़ियों का अंतिम ठौर घर में काम करने वाली महिलायें होती हैं जिन्हें होली- दीवाली के उपहार के रूप में इन्हें दिया जाता है और उसमें भी अलमारी में रखी पंद्रह साड़ियों में से सबसे पुरानी की किस्मत इसलिए जागती है कि गृह स्वामिनी के पास अपनी इस्तेमाल की हुई साड़ियों की तुलना में फलानी भाभी की खुन्नस में दी हुई वही दस घर घूम चुकी साड़ी सबसे कमतर सिद्ध हुई है.

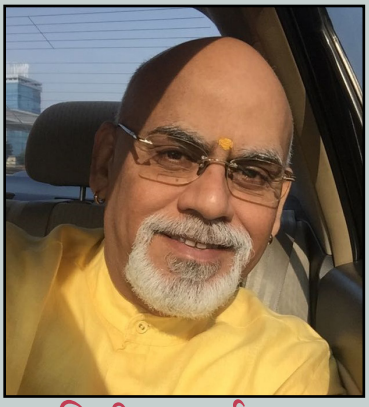

शिरीष शर्मा

मंकी ब्रिगेड

बच्चो अगर मैं पूछूं कि भारत की भूतपूर्व महिला प्रधान मंत्री का नाम बताओ तो आप सब कहेंगे- इंदिरा गांधी. अगर मैं पूछूं कि क्या आप वानर सेना के बारे में जानते हैं तो आप सब कहेंगे हां, भगवान् राम के पास थी वानर सेना जिसने उनका लंका के राजा रावण के विरुद्ध युद्ध में साथ दिया था.

अब मैं आपको बताता हूं की एक वानर सेना इंदिरा जी की भी थी. चौंक गए.

अरे सचमुच के वानरों की सेना नहीं थी, बच्चों की सेना थी अब मानो ना मानो लेकिन बच्चे इतने नटखट होते हैं कि उन्हें वानर कह देते हैं. तो इस बाल- सेना का नाम था वानर सेना या मंकी ब्रिगेड.

भारत को ग़ुलाम बनाने वाले अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ लड़ाई में अपनी हिस्सेदारी दिखाते हुए इंदिरा जी ने इस बाल सेना का गठन किया था 1940 में यानि आज से एक सौ ब्यासी साल पहले. इस सेना में 150 बच्चे शामिल हुए थे. उस समय इंदिरा जी की उम्र दस वर्ष थी. वे स्वभाव से चंचल तो थीं लेकिन चतुर भी बहुत थीं. उस छोटी सी उम्र में ही उन्होंने ये सिद्ध कर दिया कि सबको एक साथ जोड़ने का हुनर उनमें है. इस मंकी ब्रिगेड की वे ही लीडर थीं.

दस वर्ष की लीडर इंदिरा की इस वानर सेना में बारह से पंद्रह साल के बच्चे भी थे. इस सेना का काम होता था सुबह प्रभात

फेरी निकालना और इसकी आड़ में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की मदद करना. आज़ादी की लड़ाई में शामिल बड़े नेताओं का सन्देश ये सेना स्वतंत्र संगम में उतरे सभी सैनानियों तक पहुंचाया करती थी. चूंकि सब बच्चे थे तो अंग्रेज़ अधिकारी उन पर शक भी नहीं करते थे.

एक बार तो जब वे आंदोलन से संबंधित कुछ ज़रूरी कागज़ात अपनी कार में ले जा रही थीं तब एक ब्रिटिश इंस्पेक्टर आ गया और बोला कि कार की तलाशी होगी. लेकिन उनकी हाजिरजवाबी से बात बन गई. उन्होंने कहा कि प्लीज़ हमें जाने दें, स्कूल के लिए देर हो रही है. उनकी ये तरकीब काम आ गई.

समय- समय पर उन्होंने कई चुनौतियों का सामना किया. 24 जनवरी 1966 में वे भारत की प्रधान मंत्री बनीं. 31 अक्टूबर 1984 में उनके ही दो अंगरक्षकों द्वारा उनकी हत्या कर दी गई थी. उनकी पुण्यतिथि पर हम उन्हें नमन करते हैं.

रेत-समाधि ठहराव के साहित्य का रेखांकन है

गीत चतुर्वेदी

गीतांजलि श्री हिन्दी की दुर्लभ लेखिका हैं. उनके उपन्यास 'रेत-समाधि' के डेज़ी रॉकवेल द्वारा किए गए अंग्रेज़ी अनुवाद 'टॉम्ब ऑफ़ सैंड' को अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिला है. 'रेत-समाधि' एक अनूठा उपन्यास है. एक वृद्ध मां और उसकी बेटी की द्वंद्वपूर्ण स्थिति की पृष्ठभूमि में यह उपन्यास देश और मनुष्य का मार्मिक चित्रण करता है.

गीतांजलि श्री की लिखाई हिंडोले की पींग जैसी है- एक झोंके में वह काव्यात्मक हो जाती हैं, तो अगले झोंके में खांटी गद्य की ख़ुशबू बिखेर देती हैं. यह आरोह- अवरोह इस उपन्यास को संगीतमय बना देता है. लेकिन तेज़-तर्रार अदाओं वाला धमाकेदार संगीत नहीं, बल्कि धीमा और गहरा शास्त्रीय संगीत. 'रेत-समाधि' सिर्फ गीतांजलि श्री के लिए ही नहीं, बल्कि समूचे हिन्दी साहित्य के लिए औपन्यासिक कला का एक नया पहलू है. गीतांजलि श्री ख़ुद को गल्प के एक नए गलियारे में ले गई हैं और अपने साथ हिन्दी साहित्य को भी.

अगर यह पुरस्कार न भी मिलता, तब भी वह हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ गल्पकारों की सूची में हमेशा शामिल रहतीं. ग़ौर से देखा जाए, तो यह अकेले उन्हीं की उपलब्धि नहीं, बल्कि उनके अनुवादक सहित उस पूरी टीम की है, जो एक कहानी को पांडुलिपि से पुस्तक तक रूपांतरित करने में बड़ी भूमिका निभाती है.

यह पहला मौका है, जब हिन्दी ही नहीं, बल्कि समूचे दक्षिण एशिया से किसी किताब को इंटरनेशनल बुकर मिला है. 2016 से पहले तक इंटरनेशनल बुकर पुरस्कार किसी एक किताब पर नहीं, बल्कि लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड की तरह लेखक के समूचे योगदान पर दिया जाता था. तब भारतीय भाषाओं से 2009 में महाश्वेता देवी और 2013 में यूआर अनंतमूर्ति को नामांकित किया गया था. वे इसे जीत नहीं पाए थे. जब से यह पुरस्कार किसी एक किताब के अंग्रेज़ी अनुवाद को दिया जाने लगा है, तब से इसकी चर्चा में कई गुना इज़ाफ़ा हुआ है.

संसार की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं की सूची में हिन्दी कभी तीसरी, तो कभी चौथी जगह पाती रही है, लेकिन विश्व साहित्य में हिन्दी की कोई ख़ास भागीदारी कभी नहीं बन पाई. विश्व-कविता और विश्व-साहित्य के विभिन्न संकलनों पर नज़र दौड़ाई जाए, तो उनमें हिन्दी का प्रतिनिधित्व न के बराबर दिखता है. इसके कई कारण

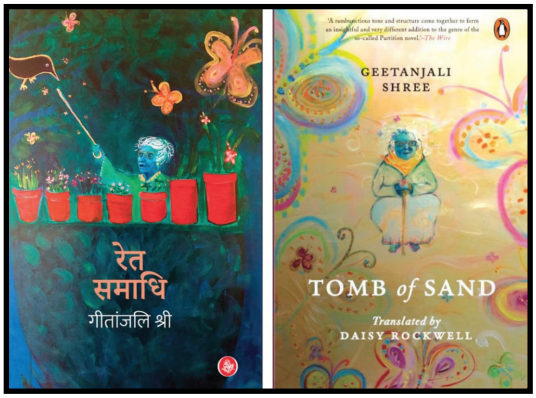

हो सकते हैं. कई बार हिन्दी की कृतियों के अच्छे अनुवाद नहीं हुए. कुछेक बार समय पर अनुवाद नहीं हुए. कुछेक बार ऐसा हुआ कि अनुवाद अच्छे हुए, लेकिन वे सिर्फ़ भारत में प्रकाशित होकर रह गए, यूरोप और अमेरिका के प्रकाशकों और पाठकों तक पहुंच ही नहीं पाए.

विश्व-साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए सही समय पर विदेशी भाषाओं में अनुवाद तथा सही समय पर उनका प्रकाशन ज़रूरी है. अनुवाद होगा, तभी हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के लेखक वैश्विक पुरस्कारों के आसपास पहुंच सकेंगे. पुरस्कार मिलना, न मिलना अलग बात है, ज़रूरी यह है कि हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं के लेखक वैश्विक स्तर पर एक प्रासंगिक 'बज़' की रचना कर सकें, उनका लेखन अंतर्राष्ट्रीय गलियारों में किसी चर्चा को जन्म दे सके.

इससे पहले कुछ मौके ऐसे ज़रूर आए, तब हिन्दी के लेखक कुछ विशिष्ट पुरस्कारों के आसपास पहुंच सके थे, जैसे 1983 में अज्ञेय ने कविता के लिए अत्यंत प्रतिष्ठित गोल्डन रीथ पुरस्कार जीता था. 1996 में निर्मल वर्मा को अमेरिका के ओक्लाहोमा विश्वविद्यालय से मिलने वाले न्यूस्टैट पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था. लेकिन इन घटनाओं के प्रति हमारे यहां कोई ख़ास उत्साह नहीं बन पाया था, ना ही इनके कारण विदेशी पाठकों में हिन्दी साहित्य के प्रति कोई ख़ास रुचि ही बन पाई थी.

विदेशों में एक आम मान्यता है कि भारत का असली साहित्यिक प्रतिनिधित्व यहां लिखा गया अंग्रेज़ी साहित्य करता है. सलमान रूश्दी ने अपने एक प्रसिद्ध निबंध में यहां तक कह दिया था कि मंटो के अलावा पूरे भारतीय साहित्य में कोई लेखक पढ़ने लायक़ नहीं. विदेशी पाठकों के भीतर भारत को जानने की जो भी भूख है, कई बार वह भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य को पढ़कर तृप्त हो जाती है. बाज़ दफ़ा उसे पता ही नहीं होता कि भारत में अन्य कई भाषाओं में भी आला दर्जे के साहित्य की रचना होती है. हिन्दी में लिखने वाली गीतांजलि श्री को यह पुरस्कार मिलने के बाद से अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक परिदृश्य में भारतीय भाषाओं के साहित्य के प्रति एक विशिष्ट उत्सुकता जागेगी, इसकी उम्मीद की जा सकती है.

दूसरी उम्मीद यह है कि हमारे यहां अनुवाद- कर्म के महत्व को नए सिरे से समझा जाएगा. साहित्य की वैश्विक संस्कृति के विकास में अनुवाद के योगदान को कमोबेश हर जगह मान्यता दी जाती है, लेकिन एक कटु सचाई यह भी है कि पूरी दुनिया में अनुवादकों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण अभी तक नहीं बन पाया है. अनुवादकों को ठीक से भुगतान नहीं किया जाता, कवर पर उनका नाम नहीं दिया जाता, और कई बार तो किताब या रचना से ही उनका नाम ग़ायब कर दिया जाता है. इस मामले में पश्चिम अपने आप को तेज़ी से सुधार रहा है. उम्मीद बनती है कि भारत में भी अनुवादकों के श्रम को यथोचित मान्यता प्रदान की जाएगी. हिन्दी से दूसरी भाषाओं में अनुवाद को नए सिरे से प्रोत्साहन मिलेगा. यह काम किसी सरकारी संस्था के बजाय उन लोगों के माध्यम से हो सकता है, जो हिन्दी के साथ ही अंग्रेज़ी तथा विदेशी भाषाओं की जानकारी रखते हैं.

गीतांजलि श्री का उपन्यास 'रेत-समाधि' एक जल्दबाज़ समय के प्रति किया गया विनम्र और मंथर प्रतिरोध भी है. हम 'फटाफट- युग' जी रहे हैं. लोगों के पास गहरा, गंभीर और विशाल पढ़ने का जैसे समय ही नहीं. सारे मीडिया गुरु, मैनेजमेंट गुरु यह सिखा रहे हैं कि तीस सेकंड्स में आपने किसी का अटैंशन हासिल नहीं किया, तो आप पर ध्यान नहीं दिया जाएगा. लेखकों से कहा जा रहा कि तेज़ रफ्तार से चलने वाले पेज टर्नर लिखिए, वरना पाठक कुछ ही पन्नों के बाद छोड़कर चला जाएगा. इन सब चीज़ों को देखकर हैरानी होती है. क्या सच में साहित्य और चिंतन को इतना

जल्दबाज़ होने की जरूरत है? क्या हम पांच सौ पेज के उपन्यास के साथ वैसा ही व्यवहार कर सकते हैं, जैसा पचास सेकंड्स की इंस्टाग्राम रील के साथ? साहित्य जीवन को फटाफट देखने का नहीं, बल्कि मैग्नीफाइंग ग्लास लगाकर, ठहरकर, देखने का नाम है. सूक्ष्म को विराट और विराट को सूक्ष्म की तरह देखने का काम है.

ऐसे समय में जब सब कुछ जल्दी-जल्दी घटित हो जाना चाहता है, लेखक जल्दी से कुछ लिखकर जल्दी से कालजयी हो जाना चाहता है, गायक जल्दी से कुछ गाकर जल्दी से महान हो जाना चाहता है, गीतांजलि श्री जैसी लेखिका बेहद इत्मीनान से, किसी चिड़िया की तरह, अपनी बातों के तिनके से किताब का एक घोंसला बनाती हैं. वह अपनी कहानी को धीमी गति से कहती हैं. ऐसा करते हुए वह एक किस्म का प्रतिरोध करती हैं. एक सुकूनदेह मंथर शैली के माध्यम से आसपास फैली जल्दबाज़ शैलियों का प्रतिरोध. उनके इस शांत, ठहरे हुए, चिंतनशील, मनन-मार्मिक और स्त्री-अंतर्मन की गहराइयों तक पहुंचने वाले उपन्यास को पुरस्कृत कर बुकर कमिटी ने दरअसल इस जल्दबाज़ समय का एक निषेध भी प्रस्तुत किया है. यह सनसनी नहीं, बल्कि ठहराव के साहित्य का रेखांकन है. समाधि शब्द में साधना, शांति और स्थिरता की जो अनुभूति है, गीतांजलि श्री के यहां वह भरपूर है.

चंद अशआर

सिमटता है अंधेरा पांव फैलाती है दीवाली
हंसाए जाती है रजनी हंसे जाती है दीवाली
- नज़ीर बनारसी

जो बुजुर्गों की दुआओं के दीयों से रौशन
रोज़ उस घर में दीवाली का जश्न होता है
- प्रताप सोमवंशी

मैं रोशनी था मुझे फैलते ही जाना था
वो बुझ गए जो समझते रहे चिराग़ मुझे...
- राजेश रेड्डी

हम अंधेरे में हैं, मगर देखो
दूर तक रौशनी हमारी है.
- अज़हर इनायती

जहां रहेगा वहीं रौशनी लुटाएगा
किसी चराग़ का अपना मकां नहीं होता
- वसीम बरेलवी

छायांकन: मणि मोहन

नवरात्रि के प्रसाद- प्रयोग

शेफ़ मकरंद कारखानिस

प्रथम दिवस

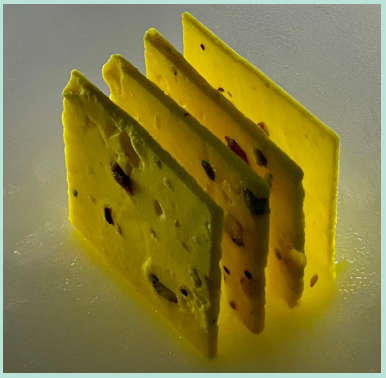

मां शैलपुत्री की आराधना का दिन. शैलपुत्री नाम संस्कृत के दो शब्दों से मिल कर बना है शैल का अर्थ संस्कृत में पर्वत होता है और पुत्री यानि बेटी. इनको पार्वती या सती देवी के नाम से भी पुकारा जाता है. आज का रंग पीला है. आज भोग लगाया पीले रंग के माहिम हलवे का या इसे आइस हलवा भी कह लें. ये ऐसी मिठाई है जो मूलतः मुंबई के माहिम क्षेत्र में बनाई जाती है. इसे बनाने के लिए सधे हुए हाथ चाहिए, ध्यान से बनाना पड़ता है, इसमें केसर का उपयोग किया गया है.

द्वितीय दिवस

नवरात्रि में दुसरे दिन मां के ब्रम्ह्चारिणी स्वरूप की पूजा होती है. शिव की आराधना में सहस्त्रों वर्षों तक घोर तप करने वाली माता के स्वरुप की पूजा है ये. इस दिन हरे रंग की प्रधानता है. भोग में पिस्ता बर्फी. काजू और पिस्ता की कतली बनाई और उस पर पिस्ता आइसक्रीम से सजावट की.

तृतीय दिवस

आज मां के चंद्रघंटा स्वरूप की आराधना है. शिव से उनका विवाह हुआ है. सोने सी दीप्ति है अंगों की और उसपर मुकुट में चन्द्रमा सजा है. आज का रंग है भूरा और वही रंग प्रसाद में झलक रहा है. Activated charcoal का प्रयोग करके बनाई गई नारियल की बर्फी, सजावट के लिए काले तिल प्रयोग में लाये गए.

चतुर्थ दिवस

आज आराधना है मां कूष्माण्डा की. ये मां का वो स्वरूप है जिसने ब्रह्मांड की रचना की. ये ही सृष्टि की आदि-स्वरूपा, आदिशक्ति हैं. इनका निवास सूर्यमंडल के भीतर के लोक में है. आज का रंग है सिंदूरी. भोग के लिए पनीर का प्रयोग करते हुए जलेबी बनाई और ऑरेंज और सेफ्रोन जैल से सजाया.

पंचम दिवस

आज जिस स्वरूप की आराधना है वह है स्कंदमाता. भगवान स्कंद 'कुमार कार्तिकेय' नाम से भी जाने जाते हैं. ये प्रसिद्ध देवासुर संग्राम में देवताओं के सेनापति बने थे. पुराणों में इन्हें कुमार और शक्ति कहकर इनकी महिमा का वर्णन किया गया है. इनकी माता होने के कारण मां दुर्गाजी के इस स्वरूप को स्कंदमाता के नाम से जाना जाता है. आज का रंग है शुभ्र. आज भोग के लिए जो व्यंजन बनाया- खरवास या पन्ना कोटा, उसे मूलतः कोलोस्ट्रम मिल्क से बनाते हैं लेकिन यहां साधारण दूध का ही प्रयोग किया है. इसे नारियल की बर्फी के ऊपर सजाया है.

षष्टम दिवस

आज मां कात्यायनी की आराधना का दिवस है. कत नामक एक प्रसिद्ध महर्षि थे, उनके पुत्र ऋषि कात्य हुए, इन्हीं कात्य के गोत्र में विश्वप्रसिद्ध महर्षि कात्यायन उत्पन्न हुए जिनने भगवती पराम्बा की उपासना करते हुए बहुत वर्षों तक बड़ी कठिन तपस्या की थी और पुत्री के रूप में पाया मां कात्यायनी को. महिषासुर के वध के प्रसंग इनसे जुड़े हैं. आज का रंग है लाल. भोग में गाजर का हलवा लेकिन थोड़े से नयेपन के साथ. इसमें डाला गया है घिसा हुआ बीटरूट यानि चुकंदर.

सप्तम दिवस

मां कालरात्रि की आराधना का दिन. देवी का यह नाम उनके स्वरूप के कारण से है. इस स्वरूप में माता का वर्ण काजल के समान काला है. आज का रंग है गाढ़ा नीला. अगर गाढ़े नीले रंग की पारंपरिक मिठाई खोजें तो कठिन होगा. मैंने यहां जापानी dessert makers की तकनीक का प्रयोग किया. वे ऐसी पारदर्शी मिठाई बनाने के लिए agar agar का उपयोग करते हैं और sticky rice का. बनाने में जो फूल प्रयोग में लाये गए हैं उनको खाया जा सकता है.

अष्टमी

आज महागौरी की आराधना का महत्व है. एक कथा के अनुसार भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए देवी ने कठोर तपस्या की थी जिससे इनका शरीर काला पड़ गया. देवी की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान इन्हें स्वीकार करते हैं और इनको गंगा-जल से स्नान करवाते हैं तब देवी विद्युत के समान अत्यंत कांतिमान गौर वर्ण की हो जाती हैं, तभी से इनका नाम गौरी पड़ा. महागौरी रूप में देवी करूणामयी, स्नेहमयी, शांत और मृदुल दिखती हैं. आज का रंग है गुलाबी. सादा सी गुलकंद बर्फी. बस इसमें चमक भरने के लिए मैंने titanium dioxide और pink colour का प्रयोग किया.

चॉकलेट स्वाद से सौंदर्य तक

माला चौहान

चॉकलेट का नाम आता है तो बच्चा हो या बड़ा एक मीठा सा स्वाद उसके मुह में तैर जाता है. शायद ही कोई हो जिसे चॉकलेट पसंद न हो. चॉकलेट तो चॉकलेट है, चाहे किसी भी रूप में हो- सादा हो या नट्स के साथ, ठोस हो या पेय के रूप में.

लेकिन चॉकलेट के सफ़र की हदें इन रसीली सरहदों के आगे हैं. अब चॉकलेट का नाम आने से केवल स्वाद तक बात नहीं रह जाती बल्कि एक और भी तस्वीर उभरती है जिसके सरोकार सौंदर्य से हैं. अमूमन सौंदर्य की बात हो तो तरह- तरह के उबटन जहन में उतर आते हैं. क्या कोई सोच सकता है कि ये उबटन चॉकलेट का हो सकता है? हल्दी- चन्दन के उबटन वाले दिन लद गए, अब तो चेहरे को चमकता है चॉकलेट का उबटन.

मैंने भी जब पहले सुना तो यकीं नहीं हुआ. लेकिन वाकई ऐसा है. इंडोनेशिया की .राजधानी जकार्ता शहर में बड़ी सफलता के साथ चल रहा है ये अनोखा चॉकलेट स्पा. बाद में मुझे पता चला कि इसकी शुरुआत का श्रेय जाता है ब्राजील को. ये अपनी तरह का बिलकुल नया प्रयोग है जो फिलहाल दुनिया के कुछ ही देशों तक सीमित है. ना सिर्फ चेहरे पर चोकलेट का 'फेस पैक' लगाया जाता है बल्कि सारे शरीर पर इसका उबटन किया जाता है. कुनकुनी तरल चॉकलेट से भरे स्पा में घंटे भर रहना बिलकुल अनोखा अनुभव है. यहां तक कि सर की मालिश के लिए भी चॉकलेट क्रीम का उपयोग किया जाता है.

सौन्दर्य के इस अनोखे नए सफ़र पर भूरी, सफ़ेद, काली और डार्क चॉकलेट सभी रवाना हैं. जकार्ता शहर में चॉकलेट स्पा की नौ शाखाऐं हैं. यूं तो हर उम्र के ग्राहक इसे अपना रहे हैं लेकिन नई पीढी में इसका क्रेज़ खास तौर से नज़र आता है. थिरेपिस्ट एडम योगी का कहना है कि चॉकलेट को उसकी सुगंध (जो तनाव भागने का काम करती है) और उसके एंटी ओक्सिडेंट गुणों के कारण चुना गया है. चॉकलेट में विटामिन A और E होते हैं जो त्वचा को कोमलता देते हैं. एक बार डेढ़ घंटा चॉकलेट से भरे स्पा में बिताने के बाद पूरे शरीर से इसकी महक लगभग हफ्ते भर आती रहती है. खासियत ये भी है कि ये हर तरह कि त्वचा के लिए उपयुक्त है.

योगी कहते हैं कि महीने में दो बार चॉकलेट स्पा का उपयोग करने से त्वचा शर्तिया निखर जाती है, कोमल और स्निग्ध हो जाती है, दाग- धब्बे भी घटने लगते हैं. योगी के "चोकोलेट स्पा और सैलून" में तरह -तरह के प्रोडक्ट भी मौजूद है - चॉकलेट बॉडी स्क्रब, चॉकलेट बॉडी मसाज, एंटी स्ट्रेस चॉकलेट आयल, चॉकलेट मोसचराइज़र. महंगा भी लगभग उतना ही है जितने और दूसरे ट्रडिशनल स्पा होते हैं.

एक फायदा जो मुझे नज़र आया वो ये कि मेरी तरह के चॉकलेट प्रेमी यदि इस स्पा में डेढ़- दो घंटा बिताते हैं तो चॉकलेट कि तीखी सुगंध झेलते-झेलते कम से कम महीने भर को तो चॉकलेट खाने कि इच्छा भर जायेगी और इस तरह से बदन में कुछ अतिरिक्त कैलोरी जाने से बचेगी.

Reliable Accounting Services Centre Ltd.

ACCOUNTS & TAXATION

Bimal Dalal
B.com(Hons.) FMICAI.ATBA
mobile: +64 211 547 375

- Accounting Services
- Asset Protection
- Business Advice
- Company Management
- GST Registration and Returns
- Rentals- Trust Returns
- Tax Planning
- Tax Returns

Rupal Dalal
B.com(Hons.)
mobile: +64 212 660 381

myob SILVER Partner

ataınz ACCOUNTANTS + TAX AGENTS INSTITUTE OF NZ

reliableacs2003@gmail.com

Address: 133, Millhouse Drive, Howick,Auckland

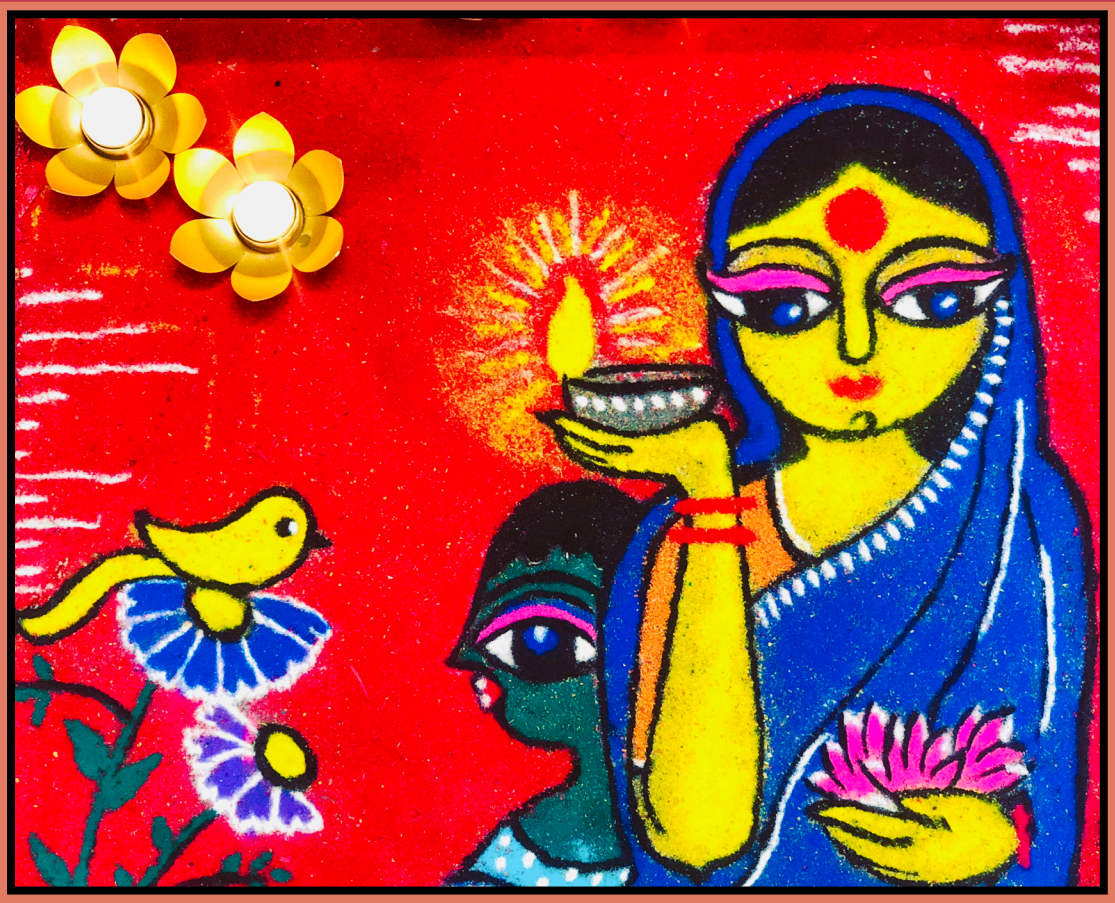

इस तिमाही का विजेता चित्र

अपराजिता शर्मा

तस्वीर में दिखती रंगोली बनाई भी अपराजिता शर्मा ने थी और चित्र भी उनका ही है. अपराजिता दिल्ली विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफ़ेसर रहीं और लेखक होने के साथ ही बेहतरीन कलाकार भी थीं. जब "पहचान" के लिए उन्होंने ये चित्र भेजा तो लगा नहीं था कि हम उन्हें इतनी जल्दी खो देंगे. "पहचान" परिवार की और से उन्हें श्रद्धांजलि.

हिंदी त्रैमासिक पहचान देश से हम, हमसे देश

अंतर्राष्ट्रीय, हिंदी त्रैमासिक ऑन लाइन पत्रिका "पहचान" हेतु आप भी रचनाएं भेज सकते हैं.

आलेख, समीक्षा, साक्षात्कार, शोध परक लेख, व्यंग्य, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, लोक साहित्य, बाल साहित्य, कविता, गीत, कहानी, लघु कथा आस्था, धरोहर, इतिहास, कला, विज्ञान, स्वास्थ आदि साहित्य की सभी विधाओं में रचनाओं का स्वागत है.

रचनाएं वर्ड फ़ाइल में अपनी तस्वीर और परिचय सहित भेजें. लेख के लिए 800 से 1,000 और कहानी के लिए अधिकतम शब्द सीमा 1200 शब्द है.

यदि आप अपना खींचा कोई चित्र पत्रिका के कवर पेज या फिर तिमाही चित्र चयन के लिए विचारार्थ भेजना चाहें तो अपने परिचय के साथ चित्र के बारे में बताते हुए ई - मेल कर सकते हैं.

संपादक मंडल का निर्णय अंतिम निर्णय होगा, इसमें विवाद की गुंजाईश नहीं होगी.

editor@pehachaan.com